International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

उच्च शिक्षा में कार्यरत सेवाकालीन शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में एकेडमिक स्टाफ कॉलेज (ASCS) की भूमिका–

प्रतिमा तिवारी
एम.ए. शिक्षाशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

वर्तमान समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नित नवीन अविष्कार हो रहे हैं जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे दैनिक जीवन में परिलक्षित होता है किन्तु ये परिवर्तन मानव जीवन के लिये कितने उपयोगी एवं सार्थक है, यह जानने के लिए हमे इनका पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है क्योंकि ज्ञान के अभाव में इन्हे अपनाना तथा इनसे लाभ प्राप्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि हेतु अनेक नवाचारों का प्रादुर्भाव हुआ साथ ही साथ छात्रों के प्रभावशाली अनुदेशन के उद्देश्य से नवीन शिक्षण विधियों एवं प्रविधियाँ विकसित हुई किन्तु इनका प्रभावशाली ढंग से उपयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों को भी इनका पूर्ण ज्ञान हो क्योंकि ज्ञान के आभाव में शिक्षक स्वयं भी इनका उत्तम ढंग से प्रयोग करने में सक्षम नहीं होगे।

सरकार द्वारा सेवाकालीन शिक्षकों में कौशल विकास तथा अपने व्यवसायिक विकास हेतु समय–समय पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिनमें भाग लेकर सेवाकालीन शिक्षक अपने शिक्षण कौशल का विकास तो कर ही सकते है साथ ही समाज में व्याप्त जटिलताओं के परिणामस्वरूप समाज में समायोजन तथा उन्नति के उद्देश्य से जिन नवाचारों का प्रादुर्भाव हुआ है उनसे परिचित होते है तथा उनका उपयोग कर कक्षा में प्रभावशाली अनुदेशन के माध्यम से छात्रों में भी उन नवाचारों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते है।

उच्च शिक्षा में कार्यरत सेवाकालीन शिक्षकों के व्यवसायिक विकास तथा शिक्षण कौशल में वृद्धि के उद्देश्य से एकेडमिक स्टाफ कॉलेज की स्थापना की गई।

एकेडमिक स्टाफ कॉलेज (ASCS):–

इसकी स्थापना अध्यापको के व्यवसायिक विकास की आवश्यकता को पहचानते हुए मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा सन् 1987 में की गई। 1987 से पूर्व इस सम्बन्ध में विश्व

विद्यालय के द्वारा कोई व्यवस्थित प्रयास नहीं किया गया था। इनकी स्थापना का सुझाव नई शिक्षा निति 1986 में दिया गया था।

यह उच्च शिक्षा में कार्यरत सेवाकालीन शिक्षकों के कौशल विकास तथा व्यवसायिक उन्नति के उद्देश्य हेतु अभिविन्यास एवं पुनश्यचर्या पाठ्यक्रम (Orientation Programme and Refresher Courses) का आयोजन करता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रमों का उद्देश्य अध्यापकों में न केवल शिक्षण सुधार है अपितु उनकी व्यवसायिक अभिवृद्धि भी है। वर्तमान समय में देश में लगभग 68 ASCS कार्य कर रहे है।

एकेडमिक स्टाफ कालेज के उद्देश्य

1. वैश्विक तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य में सामान्य शिक्षा तथा मुख्य रूप से उच्च शिक्षा के महत्व को समझाना।
2. उच्च शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर आधारभूत कौशलों को प्रदान करना तथा उनमें सुधार लाना।
3. अध्यापकों को विशिष्ट विषय में आधुनिकतम विकासों नवाचारों से परिचित कराना।
4. विश्वविद्यालय तथा कॉलेज के संगठन तथा प्रबन्धन को समझना तथा पूर्ण व्यवस्था में अध्यापकों की भूमिका को पहचानना।
5. अध्यापकों में सृजनात्मकता के विकास के अवसर प्रदान करना।
6. कार्यरत शिक्षकों को नवाचारों से परिचित कराना।

एकेडमिक स्टाफ कॉलेज के कार्यः–

ASCS अनेक प्रकार के क्रियाकलाप करता है जिसमें मानव संसाधनों के विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का नियोजन, संगठन या व्यवस्थापन तथा क्रियान्वयन इत्यादि सम्मिलित है।

ASCS के निम्न कार्य है–

1. विश्व विद्यालयों तथा सम्बद्ध कालेजों के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम तैयार करना।

2. विभिन्न विश्व विद्यालयों तथा सम्बद्ध कालेजों के अध्यापकों को विषय विशेष में नवीनतम् विकास से अवगत कराने के लिए पुनश्चर्या कार्यक्रम तैयार करना।
3. विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों के बारे में जानकारी प्राप्त करना जिससे उनके ज्ञान का लाभ प्राप्त किया जा सके।
4. पुस्तकालय तथा वाचनालय स्थापित करना जिससे पाठ्यक्रमों के लिए आवश्यक अध्ययन सामग्री प्राप्त की जा सके।
5. पाठ्यक्रमों के प्रभावशाली क्रियान्वयन के लिए आवश्यक सामाग्री तैयार करना।
6. अध्यापकों के लिए पाठ्यक्रमों का नियोजन, व्यवस्थापन तथा मूल्यांकन करना।
7. विभागाध्यक्षों, प्राचार्यों तथा अन्य व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों की व्यवस्था करना।
8. सेवाकालीन अध्यापकों के लिए अपने सहकर्मियों के साथ अनुभवों के आदान–प्रदान करने का अवसर प्रदान करना जिससे वे एक – दूसरे से भी सीख सके।
9. सेवाकालीन अध्यापकों को विभिन्न विषयों में आधुनिकतम ज्ञान से अवगत कराने के लिए मंच प्रदान करना साथ ही उच्च शिक्षा में नई शिक्षण विधियों तथा नवाचारों से परिचित कराना जिससे प्रतिभागी नवीन शिक्षण विधियों को अपने अनुदेशन का अंग बना सकें।

कार्यक्रमः–

ASCS मुख्य रूप से अध्यापकों में व्यवसायिक विकास के उद्देश्य से दो कार्यक्रमों अभिविन्यास कार्यक्रम तथा पुनश्चया पाठ्यक्रमों का आयोजन करना है। जो क्रमशः नए अध्यापकों तथा वरिष्ठ अध्यापकों के लिए आयोजित की जाती है।

अभिविन्यास कार्यक्रम (Orientation Programme):-

अध्यापकों का व्यावसायिक विकास आवश्यक है जिससे वह अपने कार्यों को अधिक दक्षता के साथ करने के लिए अपने ज्ञान, जागरूकता तथा प्रेरणा में वृद्धि कर सकें। शैक्षिक क्षेत्र में प्रवेश करने के पश्चात् या अपने व्यावसायिक कार्यक्रम के आरम्भ में शिक्षकों को कुछ कार्यक्रमों में भाग लेना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है , क्योंकि ये पाठ्यक्रम उन्हे अपने व्यवसाय से परिचित होने में सहायता प्रदान करते है।

अभिविन्यास कार्यक्रम विश्व विद्यालय तथा कॉलेजो में नवनियुक्त अध्यापकों की आवशकता को पूरा करने के एि तैयार किए जाते हैं क्योंकि इन अध्यापकों को सामान्य रूप से कोई प्रशिक्षण नहीं प्राप्त होता है। ये कार्यक्रम 4 सप्ताह के लिए तैयार किए जाते है और कार्यक्रम के दौरान समय–समय पर इनका मूल्यांकन भी होता रहता है। इन कार्यक्रमों का आयोजन स्वयं ASCS करता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विषयों के नवनियुक्त अध्यापक, अध्यापन के प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षण विधियाँ, शिक्षण कौशलों, व्यवस्थापन एवं प्रबन्धन, विश्वविद्यालय में अध्यापकों की भूमिका, राष्ट्र की अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति से शिक्षा के सम्बन्ध आदि के बारे जानकारी प्राप्त करते है।

पुनश्चर्या कार्यक्रम (पाठ्यक्रम) (Refresher Course):-

आज के युग में विभिन्न विषयों में ज्ञान का विस्तार तेजी से हो रहा है अतः अध्यापन कार्य में अपने से पहले (पूर्व) प्राप्त की हुई शिक्षा पुरानी पड़ने लगती है अतः विषय विशेष में तेजी से परिवर्तित ज्ञान से अवगत कराने के लिए पुनश्चर्या पाठ्यचर्या का आयोजन किया जाता है। यह कार्यक्रम 3 सप्ताह का होता है तथा 20–50 के बीच में अध्यापकों का समूह इसमें भाग ले सकता है। पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लेने से पहले अध्यापक के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम कर लेना आवश्यक होता है। इस कार्यक्रम में विषय विशेष में हुए नवीनतम् विकास से अध्यापकों को परिचित कराता है।

मूल्यांकनः–

अभिविन्यास कार्यक्रम तथा पुनश्चर्या कार्यक्रम दोनों में अध्यापकों में निरन्तर मूल्यांकन का भी प्रावधान रखा गया है। विषय– विशेषज्ञों द्वारा दिये गये ज्ञान के आधार पर अध्यापकों का मूल्यांकन किया जाता है। मून्यांकन समूह विचार–विमर्श सेमिनार प्रस्तुतीकरण, सूक्ष्म शिक्षण, कम्प्यूटर वर्क आदि सके आधार पर किया जाता है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के अन्त में वस्तुनिष्ठ परीक्षण के आधार पर एक परीक्षा की जाती है। इसके साथ ही पूरे कार्यक्रम में सम्पूर्ण उपलब्धि के आधार पर अध्यापकों का मूल्यांकन किया जाता हैं। पाठ्यक्रम के अन्त में निरन्तर मूल्यांकन और अन्तिम परीक्षण में अध्यापकों के निष्पादन के आधार पर अध्यापक को श्रेणी प्रदान की जाती है।

अतः हम कह सकते है कि एकेडमिक स्टाफ कालेज उच्च शिक्षा के कार्यरत सेवाकालीन शिक्षण के व्यवसायिक विकास तथा उनमें शिक्षण कौशल की वृद्धि हेतु निरन्तर किसी न किसी प्रकार में कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है जिनमें भाग लेकर शिक्षक नवीन नवाचारों से परिचित हो सके साथ ही साथ शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त जटिलताओं का

प्रभावशाली ढंग से समाधान कर सकूँ। इसके साथ ही साथ शिक्षा के गुणात्मक स्तर में वृद्वि में भी ASCS की भूमिका महत्वपूर्ण है यह विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के अन्तर्गत शिक्षकों का नवीन शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों के प्रयोग के प्रति दक्ष करता है जिससे वे अपने अनुदेशन को और अधिक प्रभावशाली बना सके। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा की मात्रात्मक वृद्धि के साथ–साथ गुणात्मक विकास भी सम्भव हो सके।

सन्दर्भ सूचीः–

1. गुप्ता, एस0पी0 भारतीय शिक्षा की समस्याएं (2016), शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. पाण्डेय, राम सकल एवं चतुर्वेदी, ममता, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक (2014–2015)
3. www.ugc.ac.in>page>Academic

4- www.allduniv.academia>Departments